ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान

प्रा. डॉ. जाधव के.के.

सहयोगी प्राध्यापक, पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर महाविद्यालय,

राणीसावरगाव ता.गंगाखेड जि.परभणी

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन गुलामी की दास्ता और पीडा से मुक्ति का युग रहा है। इस आंदोलन मे हिंदी साहित्य के साहित्यकारों ने भी अपनी भूमिका निभाई है। इन साहित्यकारों ने भारतीयों के मन में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभक्ति, अपनेपण की भावना को जगाने का भरकस प्रयास किया है। हिंदी साहित्य के साहित्यकारों ने पत्र-पत्रिका, नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता के माध्यम से राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाने का काम किया है। ब्रिटिश सरकार के जुल्म से कराहते भारतीय जनमानस के मन मे स्वराज्य की भावना जागृत हुई तब अनेक स्तरों पर अपने- अपने ढंग से स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में सभी भारतीयों ने अपना अपना योगदान दिया है। 15 अगस्त 1947 को हमारा देश ब्रिटिश सरकार से मुक्त होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। 1947 के पूर्व कई विद्रोह के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। हमें स्वतंत्र हुए आज 75 वर्ष हो गये है। हमारा भारत 200 वर्ष तक अंग्रेजो के अधिन था,जिसके बाद हमारे देश में आजादी के लिए काफी लढाईया लढी गयी। आज हम 15 अगस्त को हमारे देश का एक राष्ट्रीय पर्व मानते है। जिसे हम स्वतंत्रता दिवस के रूप में हर वर्ष बडी धूमधाम के साथ मनाते है।

देश को आजादी दिलाने के लिए हमारे बहुत से स्वतंत्रता सेनानी एंव साहित्यकारों के योगदान की भूमिका अहम् रही है। हमारे कई स्वतंत्रता सेनानी अपने प्राणों की परवाह किए बिना देश की आजादी के लिए खुद को न्यौछावर कर दिया था। ऐसे सभी स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकारों की इस निस्वार्थ देशभक्ती को याद कर उन्हे श्रद्धांजली अर्पित कर हम सभी देशवासियों द्वारा हर वर्ष देश की आजादी के दिन को याद करके बडे ही सन्मान के साथ अपने राष्ट्रीय ध्वज को फराया जाता है। सभी स्कूल, कॉलेज तथा भारत सरकार के सभी सरकारी, निमसरकारी संस्थानों में तिरंगा फहराया जाता है।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास 1757 से लेकर 1947 तक रहा है,परंतु सही रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 से माना जाता है।इस आंदोलन का मूल उद्देश केवल ब्रिटिश सरकार को समाप्त कर,भारतीय प्रजातंत्र स्थापित करना रहा है। इस आंदोलन में हजारों- लाखों लोगों की जाने गयी थी। इस आंदोलन में मुख्यरूप से पत्रकारिता और हिंदी साहित्य की मूख्य भूमिका रही है। स्वाधीनता आंदोलन मे हिंदी भाषा ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह आंदोलन हर एक क्षेत्र मे चलने लगा था।सभी क्षेत्रों, राज्यों को एक सूत्र में पिरोने का काम हिंदी भाषा एंव हिंदी साहित्य ने किया था। जैसे की- महात्मा गांधी गुजराती थे, सी राजगोपालाचारी मद्रासी थे, राजा राम मोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर बंगाली थे,लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक महाराष्ट्रीयन थे तथा अन्य क्षत्रों के अलग अलग क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया था। सभी क्रांतिकारियों ने स्वाधीनता आंदोलन का संदेश देशभर में पहुचाने के लिए हिंदी भाषा को स्वीकारा था।

स्वाधीनता आंदोलन मुख्यतः दोन प्रकार से लढा गया । एक अहिसात्मक आंदोलन तथा दूसरा हिस्सात्मक / क्रांतिकारी आंदोलन के रूप में अंग्रेजों के खिलाफ लढा गया। 1757से लेकर 1947तक अनेक आंदोलन हुए। उन आंदोलनों में- प्लासी का युद्ध 1757, बंगाल का प्रथम सैनिक विद्रोह 1764,चूआड विद्रोह 1767,सन्यासी एवं फकीर का विद्रोह 1773, बंगाल का द्वितीय सैनिक विद्रोह 1795, वेलौर का सैनिक विद्रोह 1803, वेल्लू थंपि का विद्रोह 1809, भिल विद्रोह 1817, चूआड का द्वितीय विद्रोह 1820, नायक विद्रोह 1821, बेरकपूर का प्रथम सैनिक विद्रोह 1824, महिकांत विद्रोह 1836, धर राव विद्रोह 1841, कोल्हापूर का विद्रोह 1844, संथाल विद्रोह 1854, सैनिक विद्रोह 1855, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857, निल विद्रोह 1860, कुका विद्रोह 1872, वासुदेव बलवंत फडके के मुक्ती प्रयास 1879, चाफेकर संघ का विद्रोह 1897, बंगभंग आंदोलन 1905,असहकारआंदोलन 1920, भारत छोडो आंदोलन 1942,नौसैनिक विद्रोह1946 तथा अन्य आंदोलन इस युग में हुए है।

15 ऑगस्ट 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। आज हम स्वतंत्रता संग्राम की 75 वी वर्ष गाठ मना रहे है। स्वतंत्रता दिवस हम सब भारतीयों के लिए हर्ष और उल्हास का दिन रहा है। स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुती देनेवाले हमारे वीर शहीदों का पुण्य दिवस भी है।15 अगस्त 1947 को हमारा देश ब्रिटिश सरकार से मुक्त होकर एक स्वतंत्र राष्ट्र बना। 1947 के पूर्व कई विद्रोह के बाद भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। हमें स्वतंत्र हुए आज 75 वर्ष हो गये है। हमारा भारत 200 वर्ष तक अंग्रेजो के अधिन था,जिसके बाद हमारे देश में आजादी के लिए काफी लढाईया लढी गयी। आज हम 15 अगस्त को हमारे देश का एक राष्ट्रीय पर्व मानते है। जिसे हम स्वतंत्रता दिवस के रूप में हर वर्ष बडी धूमधाम के साथ मनाते है। देश को आजादी दिलाने के लिए हमारे बहुत से क्रान्तिकारी,स्वतंत्रता सेनानी एंव साहित्यकारों के योगदान की भूमिका अहम् रही है। हमारे कई स्वतंत्रता सेनानी अपने प्राणों की परवाह किए बिना देश की आजादी के लिए खुद को न्यौछावर कर दिया था। ऐसे सभी स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकारों की इस निस्वार्थ देशभक्ती को याद कर उन्हे श्रद्धांजली अर्पित कर हम सभी देशवासियों द्वारा हर वर्ष

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

देश की आजादी के दिन को याद करके बडे ही सन्मान के साथ अपने राष्ट्रीय ध्वज को फराया जाता है।

1757 से लेकर 1947 तक अनेक क्रांतिकारियों के साथ लेखक, कवि, पत्रकार,जनसामान्य जनता ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इन शहीदों की गौरव गाथा हमे एक प्रेरणा देती है। हमारे देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए हिंदी साहित्य के साहित्यकार, पत्रकार, कवि, क्रांतिकारीयों ने बहुत बडा योगदान दिया है। जिनमें प्रेमचंद की रचना रंगभूमी, कर्मभूमी, भारतेंदु की रचना भारत दुर्दशा जयशंकर प्रसाद की रचना चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त तथा अन्य रचनाकारो की रचनाओं में देशप्रेम कुट- कुट कर भरा हुआ है। यह सभी रचनाए देशभक्ती से प्रेरित रही है। देशप्रेम की भावना जगाने के लिए सभी विद्वानों की रचनाए कारगर सिद्ध होती हुई दिखाई देती है। इन रचनाकारों में वीर सावरकर की रचना 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम, पंडित जवाहरलाल नेहरू की रचना भारत की खोज, लोकमान्य तिलक की रचना गीतारहस्य, शरदचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना पत के दावेदार आदी रचनाओं में देशभक्ती, देशप्रेम कूट कूट कर भरा हुआ है। जिन भारतीयों ने यह रचनाए पढी वे सभी भारतीय अपने घर द्वार को छोड कर देश के लिए मर मिटने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन के महासागर मे कुद उठे थे।

हिंदी साहित्य के महान राष्ट्रकवि एंव साहित्यकारों में मैथिलीशरण गुप्त का नाम आदर के साथ लिया जाता है। मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत भारती पढने के लिए अभाषी हिंदी के लोग पहली बार हिंदी भाषा सिखि तथा इस रचना का अध्ययन किया। इस रचना में देशप्रेम, राष्ट्रभक्ति कूट कूट कर भरी है। इस रचना में मैथिलीशरण गुप्त एक स्थान पर लिखते है -

मुझे तोड लेना बनमाली, उस पथ पर तुम देना फेक,
मातृभूमी पर सिस चढाने,जिस पथ पर जावे वीर अनेक,

इस प्रकार से मैथिलीशरण गुप्त की रचना भारत भारती में देश पर मर मिटने वाले वीर जवान, युवाओं के मार्ग में बिछ जाने की अदम्य ईच्छा व्यक्त करते है। झांसी की रानी रचना में सुभद्रा कुमारी चौहान भी इसी प्रकार से देशभक्ती, राष्ट्रभावना को जागृत करने का प्रयास किया है। लेखिका अपनी रचनाओं में वीर जवान, वीर युवाओं में देश प्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने का भरकस प्रयास किया है। श्याम सुंदर दास की रचना पराधीन सपने हु ँ सुख नाही तथा श्याम नारायण पांडे की रचना **हल्दी घाटी** इस रचना में महाराणा प्रताप के घोडे चेतन के लिए लिखा गया है कि-

रणबीच चौकडी भर भर कर चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोडे से पड गया हवा का पाला था।
गिरता न कभी चेतक तन पर राणा प्रताप का कोडा था।
वह दौड रह अरी मस्तक पर या आसमान पर घोडा था।

स्वतंत्रता संग्राम में देशप्रेम की भावना को जागृत करने के लिए जयशंकर प्रसाद ने **अरुण यह मधुमय** देश हमारा, सुमित्रानंदन पंत ने जय भारत**,** निराला ने भारती, जय विजय करे, स्वर्ग सस्य कमल धरे, कामता प्रसादजी ने लिखा है।

जैसे

प्राण क्या है देश के लिए,
देश खोकर जो जिए तो क्या जिए ,

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

ईकबालजी ने लिखा है-

सारे जहाँ से अच्छा, हिंदुस्ता हमारा

हम बुलबुले है उनकी,वो गुमशुदा हमारा

सारे जहाँ से अच्छा, हिंदुस्ता हमारा।

बालकृष्ण शर्मा नवीन जी ने लिखा है-

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये

एक हिलौर इधर से आये, एक हिलौर उधर से जाये,

प्राणो के लाले पड जाये,स्वर नभ में छा जाये,

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये,

इस प्रकार की रचनाए स्वतंत्रता संग्राम में अनेकों रचि गयी। इसलिए हर एक भारतीय नवजवान जाग उठा तथा इनमें नवचेतना का संचार किया गया। इस प्रकार की रचनाए रचनेवाले रचनाकारों में रामधारी सिंह दिनकर, शिवमंगल सिंह सुमन, राम नरेश त्रिपाठी, राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी, प्रेमधन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नथुराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय, तथा अन्य ऐसे अनगिनत रचनाकारों ने अपनी रचनाये लिखकर समाज में देशप्रेम, देशभक्ती जगाने का काम किया है।

आज हम राष्ट्रीय गीत के रूप में बंकिमचंद्र चटर्जी का वंदे मातरम गीत गाते है। इस गीत में देशभक्ती देश प्रेम कुट -कुट कर भरा है। जैसे

वंदे मातरम्

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्

शस्य श्यामला मातरम्

वंदे मातरम्

शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी

फुल्ल कुसुमित दुरमदल शोभिनी

सुहासिनी, सुमधुर भाषिनी

सुखदा,वरदा,मातरम्

वंदे मातरम्

इसी प्रकार से हमारा राष्ट्रगान लिखने वाले रचियता रवींद्रनाथ ठाकूर का योगदान भी अतुलनिय एवं अविस्मरणीय है। इन्होंने जन गण मन अधि नायक जय हे भारत भाग्य विधाता का लेखन किया है। यही हमारा राष्ट्रगान हर कॉलेज ,हर स्कूल ,हर सरकारी-निमसरकारी कार्यालयों में गाया जाता है। भारतीय स्वाधीनता हेतू कई लेखको ने,कवियों ने, क्रांतिकारियों ने अपनी लेखनी एंव क्रांती को तलवार मान कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया है। इन रचनाकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी तथा अन्य विद्वानों का नाम आदर के साथ लिया जाता है। साथ ही इन रचनाकारों, क्रांतिकारियों ने अपनी तलवार रुपी कला को धारदार बनाया है। इन रचनाकारों, कवियो,क्रांतिकारियों ने सर्वसामान्य लोगों के दिलो में देशभक्ती, राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाया है, साथ ही इन लोगों को अपने स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनाने हेतू प्रेरित किया है।

हिंदी साहित्य के रचनाकारों के अलावा ऐसे अनेक क्रांतिकारीयों ने अपने बलिदान देकर देश को आझाद किया है। इनमे महात्मा गांधी, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, भगतसिंग, राजगुरू, सुखदेव, सुभाषचंद्र बोस तथा अन्य क्रांतिकारियों के आव्हान के कारण अपना जीवन अर्पित

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

करने के लिए नवजवान एंव सर्वसामान्य जनता उठ खडी हुई।स्वाधिनता आंदोलन में अनेक वीर पुरुष, जवानों के बलिदान को लोग आज भी स्मरण करते है। हमारे अनेक क्रांतिकारियों ने देश को आझाद करने के लिए सर्व सामान्य जनता में ऐसी जान फर्क दी की हर एक भारतीय अंग्रेजों की गुलामी मिटाने के लिए उठ खडा हुआ।

स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारीयों, कवियों, लेखकों ने ऐसे अनेक **नारे और वचन** दिये है, जो आज भी भूले नही जाते। हर एक भारतीय इन नारो, वचनों को याद कर आज भी क्रांति की भावनाओं को जगाने का प्रयत्न किया करते है।

जैसे-

इन्कलाब जिंदाबाद- भगतसिंग

करो या मरो- महात्मा गांधी

जय हिंद- सुभाषचंद्र बोस

पूर्ण स्वराज्य- पंडित जवाहरलाल नेहरू

भारत छोडो- महात्मा गांधी

जय जवान जय किसान- लाल बहादूर शास्त्री

संपूर्ण क्रांती- जयप्रकाश नारायण

वंदे मातरम्- बंकिमचंद्र चटर्जी

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा- श्यामलाल गुप्ता पार्षद

जन गण मन अधि नायक जय हे- रवींद्रनाथ टागोर

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है- बाल गंगाधर तिलक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

-रामप्रसाद बिस्मिल

सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्ता हमारा- अलामा इकबाल

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा- सुभाष चंद्र बोस

सायमन कमिशन वापस जाओ- लाला लजपत राय

इसी प्रकार से अन्य रचनाकारों ने भी देश के लिए नारे और वचन कहे है।

अत:भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्य के साहित्यकारों ने भारतीयों के मन मे राष्ट्रीय चेतना के भाव को जागृत किया गया है। इसमें राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम, अतीत का गौरव गाण, इतिहास संस्कृति का चित्रण किया गया है। इस प्रकार से स्वाधीनता आंदोलन 1757 से लेकर 1947 तक चला था।स्वाधीनता आंदोलन में अनेक रचनाकार,पत्रकार, क्रांतिकारी तथा जनसामान्य भारतीयों ने अपना अपना योगदान दिया है। स्वतंत्रता आंदोलन मुख्यतः संघर्ष और अहिंसात्मक क्रांती के आधार पर आगे बढा।अनेक रचनाकारों, क्रांतिकारियों के आव्हान पर अपना जीवन होम देने के लिए लोग उठ खडे हुए। इन अनाम लोगों के बलिदान पर ही देश खडा है। इन बलिदानियोओं के प्रति श्रद्धा का समर्पण आज हर करते है। स्वाधीनता आंदोलन केवल राजनीतिक ही न होकर समाज में अनेक सामाजिक बुराईयों से मुक्ती का आंदोलन भी रहा है। इस प्रकार से स्वाधिनता आंदोलन का चित्रण सार रूप में देखा गया है।

सहाय्यक संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हिंदी साहित्य युग और प्रवृतिया- शिवकुमार शर्मा- अशोक प्रकाशन, दिल्ली
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- रामचंद्र शुक्ल- नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी
3. आहिंदीधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास- सूर्यनारायण रणसूभे-विकास प्रकाशन, कानपूर
4. महाकवी निराला और उनका रागविराग- कृष्णदेव शर्मा- रिगल बुक डेपो, दिल्ली

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -I) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

5. प्रतिनिधी कविताए- गजानन माधव मुक्तीबोध- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

6. हिंदी साहित्य का प्रवृतिपरक इतिहास- सभापती मिश्रा- विनय प्रकाशन, कानपूर

Cite This Article:

प्रा.डॉ.जाधव के.के. (2024). *स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 46–51) **EIIRJ.** https://doi.org/10.5281/zenodo.10646582